SPUP

Knowledge Is Power

Rajasthan History Congress

31st Session

SOUVENIR

16-18 December, 2016

Dr. Sadhana Meghwal

Local Secretary, RHC

Organized by :

SPUP

Knowledge Is Power

Faculty of Social Science and Humanities

Sardar Patel University of Police, Security & Criminal Justice, JODHPUR

(A State University)

Scanned with CamScanner

राजस्थानी लोकगीतों में लोक संस्कृति

सुरेन्द्र कुमार
सहायक आचार्य
जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं

राजस्थान की वीर प्रसूता धरती सैंकड़ों वर्षों से न सिर्फ वीरों को जन्म देती आई है वरन् संस्कार, संस्कृति, रीति रिवाज, परम्पराओं और कलाओं की धात्री भी रही है। राजस्थानी संस्कृति अपने अन्दर अनेक ऐसे संस्कार रीतिरिवाज परम्पराओं और लोक कलाओं को समेटे है जो विश्व पटल पर उसे विशिष्ठ पहचान दिलाते है। भीषण गर्मी के दिनों में जब यहां के गांव गुवाड़ में जीवन की हरियाली हँसती खेलती दृश्टिगत होती है। कठिन जीवन के अभ्यस्त यहां के लोग अपने संस्कारों और परम्पराओं के कारण प्रत्येक कठिन परिस्थिति में स्वस्थ चित्त से आगे बढ़ता है। राजस्थानी लोक गीतों में उनके दैनिक जीवन के खट्टे मीठे अनुभव, दैनिक कार्य सामाजिक संबंध, पारिवारिक, रिश्ते–नाते, परिश्रम से पूर्ण कार्य आदि सभी को अपने अन्दर समेटने का प्रयास हुआ है। लोगों के यही सब दैनिक, क्रिया–कलाप मिलकर लोक संस्कृति का निर्माण करते है।

लोकगीत जनता के स्वाभाविक उद्‌गार है जिनका प्रादुर्भाव सुख–दुःख, हर्श भोक आदि विविध अनुभूतियों के परिणाम स्वरूप हुआ है

Scanned with CamScanner

गर्मी के दिनों में रेत के धोरे जितनी जल्दी गर्म होते है रातों में उतने ही ठण्डे भी होते है ऊँट सवार कतारिये इन ठण्डी रातों में अपनी लम्बी–लम्बी यात्राएं लोकगीतों के सहारे ही पूरी करते है। सावन–भादो की बरसाती रातों में जब 'तीजणी' प्रियतम की राह देखती हुई व्याकुल हो उठती है उसका हृदय प्रियतम के लिए तड़पता है तो लोकगीतों की लहरियां उस विरहिणी के हृदय के ताप पर भीतल चंदन का लेप लगाते है। नवरात्रि में देवी पूजा के समय लोक देवताओं के जम्मा–जागरण में लोक देवताओं का चरित्र चित्रण ओजस्वी वाणी में किया जाता है लोकगीत, लोक भजन, पड़ इत्यादि लोक गीतों के रूप लोक संस्कृति को अनेक प्रकार से मुखरित करते है। राजस्थानी लोक संस्कृति में कोई भी मांगलिक कार्य बिना लोक गीतों के सम्पन्न नहीं होता चाहे जन्मोत्सव हो, चाहे त्योहार, चाहे विवाह हो, चाहे अन्य कोई भी संस्कार हो बिना लोकगीतों के पूरे नहीं होते हैं। राजस्थानी लोग कठिन जीवन के अभ्यस्त होते है। प्रत्येक समय लोकगीतों की एक अजस्त्रधारा प्रवाहमान रहती है।

Scanned with CamScanner